कान्होजी आंग्रे द्वीप

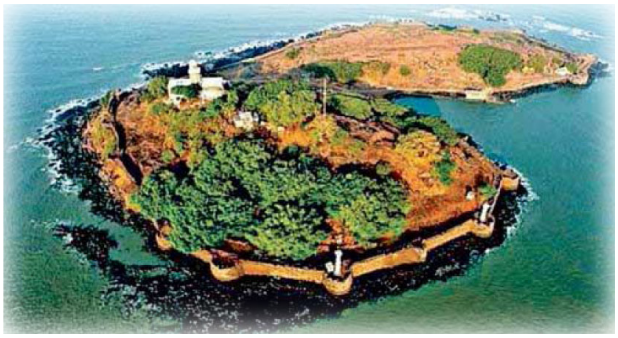

पहले खांदेरी द्वीप से परिचित गुंबद के आकारवाला कान्होजी आंग्रे द्वीप मुंबई बंदरगाह की दक्षिणी सीमा को चिन्हित करता है तथा अलिबाग में थल मत्स्य बंदरगाह के सामने स्थित है. थल (4.5 कि.मी.) अलिबाग (9.5 कि. मी.) और गेट वे ऑफ इंडिया (23 कि.मी.) से द्वीप पर समुद्री मार्ग द्वारा पहुँचा जा सकता है.

कान्होजी आंग्रे द्वीप पर पोर्तुगीज द्वारा बनाया गया एक किला है जिसे मराठों ने उनकी फौज और नौसेना रखने के लिए कब्जे में लिया था. कान्होजी आंग्रे मराठा नौसेना के नौसेनाध्यक्ष थे जिन्होंने खांदेरी द्वीप पर सैन्य संचालन अड्डा बनाया था और उपनिवेशी ताकतों के व्यापारी जहाजों पर हमला करते हुए उन्हें जानमाल का नुकसान पहुँचाया. कान्होजी आंग्रे ने 1708 में मराठा नौसेना की कमान संभाली थी. वर्ष 1729 में उनकी मृत्यु तक उन्होंने कई समुद्री लडाईयाँ लडी थी और विजयी रहे थे. मुंबई पोर्ट ट्रस्ट की 125 वीं वर्षगाँठ के अवसर पर 1998 में उनके सम्मान में खांदेरी द्वीप को उनका नाम दिया गया था.

कान्होजी आंग्रे द्वीप कान्होजी आंग्रे के नौदलीय वीरोचित कार्य का एक ऐतिहासिक प्रतीक है.

शिवाजी महाराज के समय के परकोटे तथा किलेबन्दी अभी भी साबूत है जिसे जेट्टी से लाइट हाऊस तक खडी ढालुआँ फर्श की सडक पर चढते समय देखा जा सकता है, अवतरण जेट्टी की दाहिनी ओर बरगद के पेड़ के नीचे हिंदू मान्यता के अनुसार वेताल देव का एक छोटा मंदिर है. उसके नजदीक मुसलमान मजार है जो पीर दाऊद का दर्गा नाम से मशहूर है. स्थानिय मच्छुआरें चढावा अर्पण करके इस द्वीप के दोनों देवताओं को मना लेते है.

खांदेरी द्वीप उसके दीपघर के लिए भी मशहूर है जो 1852 में एक बीकन के निर्माण से अस्तित्व में आया. दीपघर का निर्माण कार्य अक्तूबर 1866 में शुरु हुआ था और मेसर्स चान्स ब्रदर्स, बर्मिंगहॅम ने फर्स्ट ऑर्डर ऑप्टिक असेंब्ली तथा बड़ी बातीवाली बत्ती (लैम्प)

उत्पादित करके आपूर्ति की थी ऐसे एक प्रकाश उपकरणको टॉवर पर संस्थापित किया गया था. यह 47 मीटर्स के उत्थापन सहित 17 मीटर उँचा अष्टकोणीय चिनाई मीनार का दीप घर है. जब

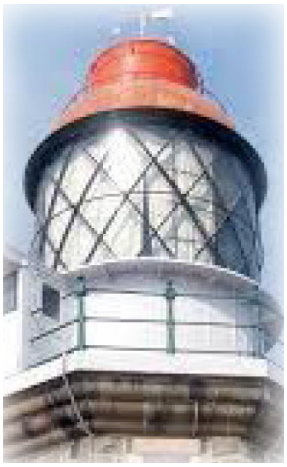

आप इसकी उँचाई तक बहुत सारी सँकरी घुमावदार सीढियों पर चढकर पहुँचते हो तो यह विशाल बत्ती उसके अद्भूत रुप को प्रकट करती है. दर्पणों का गोल वास्तविक प्रकाश को घेरता है जो एक अवतल षटकोण होकर बराबर घटते हुए अंडाकार शीर्श तक जाता है. षटकोण की बाजुएँ बडे त्रिकोणीय प्रिज्मों की बनी हैं जो हर कोन से प्रकाश परिवर्तित करती है, उसे दस हजार गुना केंद्रीत तथा आवर्धित करके सिलेंड्रिकल लेन्सेस के जरिए अंतिमतः रिदमिक फ्लॅशेस में प्रक्षेपित करती है जो प्रत्येक बाजू में आँखों जैसी है. स्फटिक गोल का वजन लगभग 2 टन है, आसानी से घुमता है और हर दस सेकंड में 25 नॉटिकल माइल्स की दूरी तक लाईट फैलाता है.

जुलाई 2008 में लाइट को सौरउर्जा आधारित आधुनिक लाइट में परिवर्तित किया गया था तथा पूरी तरह से स्वचालित है.

मुंबई तथा आसपास के पर्यटकों के लिए कान्होजी आंग्रे द्वीप दीपघर की पर्यटन क्षमता खोजने का निर्णय किया गया है क्योंकि यह दीपघर शांत और अत्यंत पर्यावरण अनुकूल स्थल है. द्वीप में किले का बुर्ज और तोप का पाइंट ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रेक्षणीय है. द्वीप से मनोहर दृश्य दिखता है और यहाँ आनेवाले पर्यटक समृध्द अनुभव का मजा ले सकते हैं.

कान्होजी आंग्रे द्वीप की पर्यटन क्षमता बढाने के लिए पोत परिवहन मंत्रालय तथा पर्यटन मंत्रालय ने निम्न पर्यटन घटकों का विकास करने के लिए संयुक्त रुप से कार्य करने की योजना बनायी है.

- पर्यटन के लिए दीपघर मीनार का संरक्षण तथा नवीनीकरण
- पर्यटक फेरी के लिए जेट्टी
- किले की दीवारों की पुनर्स्थापना तथा संरक्षण
- द्वीप के लंण्डस्केप में वृध्दि
- गेटवे से फेरी
- कान्होजी आंग्रे पर ऑन–बोर्ड दृकश्राव्य शो

- मोटर बोट्स और स्पीड बोट्स
- फेरी टर्मिनल्स कम इंफो सेंटर
- प्रिमियम दीपघर निवास/विरासत शैली के आवास
- तंबू शैली का आवास/शिविर स्थल
- भोजनालय तथा फूड कोर्ट
- बाहरी सम्मेलन क्षेत्र

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट ने उनके कार्पोरेट सामाजिक दायित्व पहल के अधीन प्राकृतिक विरासत पर्यटन स्थल के रुप में कान्होजी आंग्रे द्वीप के विकास के लिए रु.30 लाख की राषि का अंशदान दिया है.